

# 多角度立意作文指导

王宝贵 主编



辽宁大学出版社

# 多角度立意作文指导

王宝贵 主编

江苏工业学院图书馆  
藏书章

寻散文立意痕迹

辽宁大学出版社

一九八九年·沈阳

ISBN 7-5381-0626-X

元06.1 16开 C·16

责任编辑 常 江

封面设计 陈景泓

责任校对 江 寻

## 多角度立意作文指导

主编 王宝贵

\*

辽宁大学出版社出版发行 (沈阳市崇山西路3段4号)

朝阳新华印刷厂分厂印刷

\*

开本：787×1092 1/32 印张：5.125 字数：110千

1989年6月第1版 1989年6月第1次印刷

印数：1—20100

\*

ISBN 7-5610-0592-X

G·191 定价：1.50元

**顾问** 贾继英 李治良  
**主编** 王宝贵  
**副主编** 徐德顺 李亮 张大文

**编委** (按姓氏音序排列)

- |              |     |     |     |     |
|--------------|-----|-----|-----|-----|
| (1) ······   | 鲍德明 | 蔡斌芳 | 陈成龙 | 丁一林 |
| (2) ······   | 方渭泉 | 黄兆森 | 黄金山 | 廖晏钟 |
| (3) ······   | 刘友三 | 莫惠昌 | 潘定远 | 王世发 |
| (4) ······   | 王秉钧 | 汪兆龙 | 薛章辉 | 许柏青 |
| (5) ······   | 杨光  | 周冰人 |     |     |
| (6) ······   |     |     |     |     |
| (7) ······   |     |     |     |     |
| (8) ······   |     |     |     |     |
| (9) ······   |     |     |     |     |
| (10) ······  |     |     |     |     |
| (11) ······  |     |     |     |     |
| (12) ······  |     |     |     |     |
| (13) ······  |     |     |     |     |
| (14) ······  |     |     |     |     |
| (15) ······  |     |     |     |     |
| (16) ······  |     |     |     |     |
| (17) ······  |     |     |     |     |
| (18) ······  |     |     |     |     |
| (19) ······  |     |     |     |     |
| (20) ······  |     |     |     |     |
| (21) ······  |     |     |     |     |
| (22) ······  |     |     |     |     |
| (23) ······  |     |     |     |     |
| (24) ······  |     |     |     |     |
| (25) ······  |     |     |     |     |
| (26) ······  |     |     |     |     |
| (27) ······  |     |     |     |     |
| (28) ······  |     |     |     |     |
| (29) ······  |     |     |     |     |
| (30) ······  |     |     |     |     |
| (31) ······  |     |     |     |     |
| (32) ······  |     |     |     |     |
| (33) ······  |     |     |     |     |
| (34) ······  |     |     |     |     |
| (35) ······  |     |     |     |     |
| (36) ······  |     |     |     |     |
| (37) ······  |     |     |     |     |
| (38) ······  |     |     |     |     |
| (39) ······  |     |     |     |     |
| (40) ······  |     |     |     |     |
| (41) ······  |     |     |     |     |
| (42) ······  |     |     |     |     |
| (43) ······  |     |     |     |     |
| (44) ······  |     |     |     |     |
| (45) ······  |     |     |     |     |
| (46) ······  |     |     |     |     |
| (47) ······  |     |     |     |     |
| (48) ······  |     |     |     |     |
| (49) ······  |     |     |     |     |
| (50) ······  |     |     |     |     |
| (51) ······  |     |     |     |     |
| (52) ······  |     |     |     |     |
| (53) ······  |     |     |     |     |
| (54) ······  |     |     |     |     |
| (55) ······  |     |     |     |     |
| (56) ······  |     |     |     |     |
| (57) ······  |     |     |     |     |
| (58) ······  |     |     |     |     |
| (59) ······  |     |     |     |     |
| (60) ······  |     |     |     |     |
| (61) ······  |     |     |     |     |
| (62) ······  |     |     |     |     |
| (63) ······  |     |     |     |     |
| (64) ······  |     |     |     |     |
| (65) ······  |     |     |     |     |
| (66) ······  |     |     |     |     |
| (67) ······  |     |     |     |     |
| (68) ······  |     |     |     |     |
| (69) ······  |     |     |     |     |
| (70) ······  |     |     |     |     |
| (71) ······  |     |     |     |     |
| (72) ······  |     |     |     |     |
| (73) ······  |     |     |     |     |
| (74) ······  |     |     |     |     |
| (75) ······  |     |     |     |     |
| (76) ······  |     |     |     |     |
| (77) ······  |     |     |     |     |
| (78) ······  |     |     |     |     |
| (79) ······  |     |     |     |     |
| (80) ······  |     |     |     |     |
| (81) ······  |     |     |     |     |
| (82) ······  |     |     |     |     |
| (83) ······  |     |     |     |     |
| (84) ······  |     |     |     |     |
| (85) ······  |     |     |     |     |
| (86) ······  |     |     |     |     |
| (87) ······  |     |     |     |     |
| (88) ······  |     |     |     |     |
| (89) ······  |     |     |     |     |
| (90) ······  |     |     |     |     |
| (91) ······  |     |     |     |     |
| (92) ······  |     |     |     |     |
| (93) ······  |     |     |     |     |
| (94) ······  |     |     |     |     |
| (95) ······  |     |     |     |     |
| (96) ······  |     |     |     |     |
| (97) ······  |     |     |     |     |
| (98) ······  |     |     |     |     |
| (99) ······  |     |     |     |     |
| (100) ······ |     |     |     |     |
| (101) ······ |     |     |     |     |
| (102) ······ |     |     |     |     |
| (103) ······ |     |     |     |     |
| (104) ······ |     |     |     |     |
| (105) ······ |     |     |     |     |
| (106) ······ |     |     |     |     |
| (107) ······ |     |     |     |     |
| (108) ······ |     |     |     |     |
| (109) ······ |     |     |     |     |
| (110) ······ |     |     |     |     |
| (111) ······ |     |     |     |     |
| (112) ······ |     |     |     |     |
| (113) ······ |     |     |     |     |
| (114) ······ |     |     |     |     |
| (115) ······ |     |     |     |     |
| (116) ······ |     |     |     |     |
| (117) ······ |     |     |     |     |
| (118) ······ |     |     |     |     |
| (119) ······ |     |     |     |     |
| (120) ······ |     |     |     |     |
| (121) ······ |     |     |     |     |
| (122) ······ |     |     |     |     |
| (123) ······ |     |     |     |     |
| (124) ······ |     |     |     |     |
| (125) ······ |     |     |     |     |
| (126) ······ |     |     |     |     |
| (127) ······ |     |     |     |     |
| (128) ······ |     |     |     |     |
| (129) ······ |     |     |     |     |
| (130) ······ |     |     |     |     |
| (131) ······ |     |     |     |     |
| (132) ······ |     |     |     |     |
| (133) ······ |     |     |     |     |
| (134) ······ |     |     |     |     |
| (135) ······ |     |     |     |     |
| (136) ······ |     |     |     |     |
| (137) ······ |     |     |     |     |
| (138) ······ |     |     |     |     |
| (139) ······ |     |     |     |     |
| (140) ······ |     |     |     |     |
| (141) ······ |     |     |     |     |
| (142) ······ |     |     |     |     |
| (143) ······ |     |     |     |     |
| (144) ······ |     |     |     |     |
| (145) ······ |     |     |     |     |
| (146) ······ |     |     |     |     |
| (147) ······ |     |     |     |     |
| (148) ······ |     |     |     |     |
| (149) ······ |     |     |     |     |
| (150) ······ |     |     |     |     |
| (151) ······ |     |     |     |     |
| (152) ······ |     |     |     |     |
| (153) ······ |     |     |     |     |
| (154) ······ |     |     |     |     |
| (155) ······ |     |     |     |     |
| (156) ······ |     |     |     |     |
| (157) ······ |     |     |     |     |
| (158) ······ |     |     |     |     |
| (159) ······ |     |     |     |     |
| (160) ······ |     |     |     |     |
| (161) ······ |     |     |     |     |
| (162) ······ |     |     |     |     |
| (163) ······ |     |     |     |     |
| (164) ······ |     |     |     |     |
| (165) ······ |     |     |     |     |
| (166) ······ |     |     |     |     |
| (167) ······ |     |     |     |     |
| (168) ······ |     |     |     |     |
| (169) ······ |     |     |     |     |
| (170) ······ |     |     |     |     |
| (171) ······ |     |     |     |     |
| (172) ······ |     |     |     |     |
| (173) ······ |     |     |     |     |
| (174) ······ |     |     |     |     |
| (175) ······ |     |     |     |     |
| (176) ······ |     |     |     |     |
| (177) ······ |     |     |     |     |
| (178) ······ |     |     |     |     |
| (179) ······ |     |     |     |     |
| (180) ······ |     |     |     |     |
| (181) ······ |     |     |     |     |
| (182) ······ |     |     |     |     |
| (183) ······ |     |     |     |     |
| (184) ······ |     |     |     |     |
| (185) ······ |     |     |     |     |
| (186) ······ |     |     |     |     |
| (187) ······ |     |     |     |     |
| (188) ······ |     |     |     |     |
| (189) ······ |     |     |     |     |
| (190) ······ |     |     |     |     |
| (191) ······ |     |     |     |     |
| (192) ······ |     |     |     |     |
| (193) ······ |     |     |     |     |
| (194) ······ |     |     |     |     |
| (195) ······ |     |     |     |     |
| (196) ······ |     |     |     |     |
| (197) ······ |     |     |     |     |
| (198) ······ |     |     |     |     |
| (199) ······ |     |     |     |     |
| (200) ······ |     |     |     |     |
| (201) ······ |     |     |     |     |
| (202) ······ |     |     |     |     |
| (203) ······ |     |     |     |     |
| (204) ······ |     |     |     |     |
| (205) ······ |     |     |     |     |
| (206) ······ |     |     |     |     |
| (207) ······ |     |     |     |     |
| (208) ······ |     |     |     |     |
| (209) ······ |     |     |     |     |
| (210) ······ |     |     |     |     |
| (211) ······ |     |     |     |     |
| (212) ······ |     |     |     |     |
| (213) ······ |     |     |     |     |
| (214) ······ |     |     |     |     |
| (215) ······ |     |     |     |     |
| (216) ······ |     |     |     |     |
| (217) ······ |     |     |     |     |
| (218) ······ |     |     |     |     |
| (219) ······ |     |     |     |     |
| (220) ······ |     |     |     |     |
| (221) ······ |     |     |     |     |
| (222) ······ |     |     |     |     |
| (223) ······ |     |     |     |     |
| (224) ······ |     |     |     |     |
| (225) ······ |     |     |     |     |
| (226) ······ |     |     |     |     |
| (227) ······ |     |     |     |     |
| (228) ······ |     |     |     |     |
| (229) ······ |     |     |     |     |
| (230) ······ |     |     |     |     |
| (231) ······ |     |     |     |     |
| (232) ······ |     |     |     |     |
| (233) ······ |     |     |     |     |
| (234) ······ |     |     |     |     |
| (235) ······ |     |     |     |     |
| (236) ······ |     |     |     |     |
| (237) ······ |     |     |     |     |
| (238) ······ |     |     |     |     |
| (239) ······ |     |     |     |     |
| (240) ······ |     |     |     |     |
| (241) ······ |     |     |     |     |
| (242) ······ |     |     |     |     |
| (243) ······ |     |     |     |     |
| (244) ······ |     |     |     |     |
| (245) ······ |     |     |     |     |
| (246) ······ |     |     |     |     |
| (247) ······ |     |     |     |     |
| (248) ······ |     |     |     |     |
| (249) ······ |     |     |     |     |
| (250) ······ |     |     |     |     |
| (251) ······ |     |     |     |     |
| (252) ······ |     |     |     |     |
| (253) ······ |     |     |     |     |
| (254) ······ |     |     |     |     |
| (255) ······ |     |     |     |     |
| (256) ······ |     |     |     |     |
| (257) ······ |     |     |     |     |
| (258) ······ |     |     |     |     |
| (259) ······ |     |     |     |     |
| (260) ······ |     |     |     |     |
| (261) ······ |     |     |     |     |
| (262) ······ |     |     |     |     |
| (263) ······ |     |     |     |     |
| (264) ······ |     |     |     |     |
| (265) ······ |     |     |     |     |
| (266) ······ |     |     |     |     |
| (267) ······ |     |     |     |     |
| (268) ······ |     |     |     |     |
| (269) ······ |     |     |     |     |
| (270) ······ |     |     |     |     |
| (271) ······ |     |     |     |     |
| (272) ······ |     |     |     |     |
| (273) ······ |     |     |     |     |
| (274) ······ |     |     |     |     |
| (275) ······ |     |     |     |     |
| (276) ······ |     |     |     |     |
| (277) ······ |     |     |     |     |
| (278) ······ |     |     |     |     |
| (279) ······ |     |     |     |     |
| (280) ······ |     |     |     |     |
| (281) ······ |     |     |     |     |
| (282) ······ |     |     |     |     |
| (283) ······ |     |     |     |     |
| (284) ······ |     |     |     |     |
| (285) ······ |     |     |     |     |
| (286) ······ |     |     |     |     |
| (287) ······ |     |     |     |     |
| (288) ······ |     |     |     |     |
| (289) ······ |     |     |     |     |
| (290) ······ |     |     |     |     |
| (291) ······ |     |     |     |     |
| (292) ······ |     |     |     |     |
| (293) ······ |     |     |     |     |
| (294) ······ |     |     |     |     |
| (295) ······ |     |     |     |     |
| (296) ······ |     |     |     |     |
| (297) ······ |     |     |     |     |
| (298) ······ |     |     |     |     |
| (299) ······ |     |     |     |     |
| (300) ······ |     |     |     |     |
| (301) ······ |     |     |     |     |
| (302) ······ |     |     |     |     |
| (303) ······ |     |     |     |     |
| (304) ······ |     |     |     |     |
| (305) ······ |     |     |     |     |
| (306) ······ |     |     |     |     |
| (307) ······ |     |     |     |     |
| (308) ······ |     |     |     |     |
| (309) ······ |     |     |     |     |
| (310) ······ |     |     |     |     |
| (311) ······ |     |     |     |     |
| (312) ······ |     |     |     |     |
| (313) ······ |     |     |     |     |
| (314) ······ |     |     |     |     |
| (315) ······ |     |     |     |     |
| (316) ······ |     |     |     |     |
| (317) ······ |     |     |     |     |
| (318) ······ |     |     |     |     |
| (319) ······ |     |     |     |     |
| (320) ······ |     |     |     |     |
| (321) ······ |     |     |     |     |
| (322) ······ |     |     |     |     |
| (323) ······ |     |     |     |     |
| (324) ······ |     |     |     |     |
| (325) ······ |     |     |     |     |
| (326) ······ |     |     |     |     |
| (327) ······ |     |     |     |     |
| (328) ······ |     |     |     |     |
| (329) ······ |     |     |     |     |
| (330) ······ |     |     |     |     |
| (331) ······ |     |     |     |     |
| (332) ······ |     |     |     |     |
| (333) ······ |     |     |     |     |
| (334) ······ |     |     |     |     |
| (335) ······ |     |     |     |     |
| (336) ······ |     |     |     |     |
| (337) ······ |     |     |     |     |
| (338) ······ |     |     |     |     |
| (339) ······ |     |     |     |     |
| (340) ······ |     |     |     |     |
| (341) ······ |     |     |     |     |
| (342) ······ |     |     |     |     |
| (343) ······ |     |     |     |     |
| (344) ······ |     |     |     |     |
| (345) ······ |     |     |     |     |
| (346) ······ |     |     |     |     |
| (347) ······ |     |     |     |     |
| (348) ······ |     |     |     |     |
| (349) ······ |     |     |     |     |
| (350) ······ |     |     |     |     |
| (351) ······ |     |     |     |     |
| (352) ······ |     |     |     |     |
| (353) ······ |     |     |     |     |
| (354) ······ |     |     |     |     |
| (355) ······ |     |     |     |     |
| (356) ······ |     |     |     |     |
| (357) ······ |     |     |     |     |
| (358) ······ |     |     |     |     |
| (359) ······ |     |     |     |     |
| (360) ······ |     |     |     |     |
| (361) ······ |     |     |     |     |
| (362) ······ |     |     |     |     |
| (363) ······ |     |     |     |     |
| (364) ······ |     |     |     |     |
| (365) ······ |     |     |     |     |
| (366) ······ |     |     |     |     |
| (367) ······ |     |     |     |     |
| (368) ······ |     |     |     |     |
| (369) ······ |     |     |     |     |
| (370) ······ |     |     |     |     |
| (371) ······ |     |     |     |     |
| (372) ······ |     |     |     |     |

## 前言

在中学生作文中，立意是非常重要的一个环节。本书的编写，旨在提高同学们多角度立意的能力。本书编写体例的特点是，先提供有关材料，然后对如何从不同角度立意加以指导，并拟出相应的作文题目。每道文题均附有一篇经过评析的习作例文，以供参考。

全书共分为五个单元，包括17篇指导文章，72道作文题目及其相应的学生习作。学生习作涉及记叙文、说明文、议论文、应用文、情景文、散文等多种文体。

参加本书撰写、组织并评析学生习作的有下列同志（按单位音序排列）：

复旦大学附属中学 张大文

福建师范大学附属中学 薛章辉

福建省清流县教育局教研室 黄兆森

福建省福安县第一中学 陈成龙

广东省深圳中学 李亮

湖北省松滋县教育局教研室 王世发

河南省罗山县教育局教研室 潘定远

华中师范大学第一附属中学 刘友三

辽宁省黑山县八道壕煤矿中学 罗吉祥

辽宁省兴城市高中 苏群山

辽宁省义县高中 刘成文

辽宁省喀左县高中 郭建洲

江苏省徐州市教育局教研室 徐德顺

江苏省太仓县中学 苏冰融

江苏省吴江县震泽中学 汪兆龙

上海市嘉定县教育局教研室 鲍德明

上海中学 丁一林

上海市闵行第四中学 杨光

为本书组织、评析学生习作的还有下列同志（按姓氏音序排列）：

董纪林 杜秀珍 黄志和 黄帼英 韩素华 何其芳

蒋毓秀 金百昌 林华彬 刘寿昌 刘传启 刘晓光

李月娣 李解放 罗成 裴淑芸 秋坪 邵荷娟

孙启民 唐洁漪 王蕾蕾 王丽娟 吴志方 阎志洪

杨璋琳 纵精品 赵静 周宁生 张帆 章培林

赵忠厚

在本书编写过程中，我们得到了诸多同仁的热心关注和大力支持，在此谨表示衷心感谢。由于编者水平所限，书中疏漏之处在所难免，敬请专家学者及同仁不吝赐教。

编者

1989年4月

# 目 录

前 言	
第一单元	(篆隶书入门基础) 委 鑑
指导·例文评析(11例)	(1)
第二单元	师冕璽 山金黄 森兆黄 袁熙式
指导·例文评析(15例)	(29)
第三单元	青邱书 瞿章瑛 欧兆玉 谢秉王
指导·例文评析(10例)	(67)
第四单元	
指导 例文评析(19例)	(90)
第五单元	
指导 例文评析(17例)	(127)

## 第一单元

示题（二）

### 提要

这一单元提供了3组材料，设计了训练指导，共10道作文题目，要求从不同角度立意、构思，侧重练习写作记叙和说明两种体裁的文章。这一单元共配编了11篇习作例文及其评析，供同学们写作时参考。

示题（三）

### 第一组

#### 【指导】

#### （一）材料

某中学学生王军，今年暑假乘火车去乡下看望姨母。由于带的东西很多，下车时又匆匆忙忙，走出车站后才发现，挂在车窗钩上的书包忘拿了。书包里不仅有钱，有粮票，更要紧的是还有学生证和下学期要用的语文及数学课本。想到下学期的学习，王军心急如火，不知该怎么办，弄得整个暑假都过得不愉快。

开学后，班主任张老师递给他一张包裹单——原来那丢

失的书包寄回来了。包裹单上的署名是“解放军战士”，这使王军十分感动。他想：这位战士肯定是在火车上和他坐在一起的那位解放军同志。

## （二）要求

1. 从王军的角度，以《下乡》为题，写一篇700字左右的记叙文，内容以记事为主。
2. 从王军的角度，以《书包丢失以后》为题，写一篇700字左右的记叙文，侧重写人。
3. 从解放军战士的角度，以《愉快的旅行》为题，写一篇700字左右的记叙文，侧重写人。
4. 以《绿色的车厢》为题，写一篇600字左右的说明文，介绍列车车厢。

## （三）提示

第1题是记叙文，要求以记事为主。而要把某件事说清楚，就一定要写清楚发生的什么事，是在什么时间和地点发生的，事情的起因、经过和结果怎么样。不然，文章内容就会显得不完整，眉目不清楚，也就不能很好地表达中心思想。《下乡》这篇记叙文，可以“假如我就是王军”这个角度来构思，用第一人称，完整地记述下乡的动因、经过以及到达目的地后的情况，以此表现某种思想感情。要注意材料的选择与组织，做到内容具体，详略得当，有条有理。

第2题也是记叙文，侧重写人。可用第三人称，着重叙写王军丢失书包以后的情绪变化。书包里装有下学期用的语文和数学课本，丢了书包，下学期怎么上课？你不妨替王军想想。他会怎么想？情绪有什么变化？会有什么表现？要把这些方面具体地、形象生动地叙述和描写出来。要把对王军的外貌、神态、动作、心理的描写作为重点。

第3题仍是记叙文。可以用第三人称，叙写王军与解放军车上相处的那一段。要重在人物的语言描写。《愉快的旅行》要表现的中心，应是“愉快”二字。为此，就要把他们的对话写得生动有趣，显出“谈笑风生”的味道来。可以着重写解放军战士的问话、谈话，突出这位战士的个性特征，从而把人物写得栩栩如生，呼之欲出。

第4题是说明文。说明文是说明事物或事理的。这篇以《绿色的车厢》为题的说明文，应该抓住车厢的特点，重点运用列数字的方法，具体说明车厢的外形、构造、内部设施及功能、用途等有关方面，给人以“如临其境、如见其物”的印象。

**【例文】**正一出恩穿，趁住人同中讲，聊着话题图不  
不二四三，事个发汗黑天白净。  
江苏省徐州市第二十四中学 梅 枚

## 下 乡

江苏省徐州市第二十四中学 梅 枚

我就要见到分别七年的珍姐了，心中一阵狂喜。没等汽车停稳，我便挤出车门，向出站口冲去。出了车站，走了半里来路，向右转，沿着向北去的柏油路，经过医院，电机厂，菜园地，过水渠右转向东，走进苹果园。“金帅”“青香蕉”泛着青光，“红星”红得耀眼，微风拂过，飘来阵阵清香。我无暇细看，快步走出果园，来到我熟悉的小院前。“郭姨！”我高兴地喊道。“哎呀！军军，这么早就到了。吴珍，快起来，军军来了。”郭姨热情地说。

“军军，我没去接你，又要怪我说话不算话了。”说着，珍姐拖着鞋，披着衣服拉我走进屋里。接过我的旅行

包，把我按在椅子上，兴高采烈地说：“我赢了，我赢了。”  
我有点丈二金刚摸不着头脑，笑着说：“什么事？你赢什么了？”

她脱掉外衣，抑制不住喜悦地说：“军军，七年前你来时，我在家闲着。一年后，我承包了门前的大果园。你知道，我懂什么？我请了三位果农帮忙，每年每人1500元工资，外加一分分红。头一年我净赚一万三，三年我存了七万多。这下子麻烦来了，有‘借钱的’，有要‘赞助’的，有要跟我合伙的，我都得答应他们。可还不放过我，前些日子乡里花几千元请了个律师把我告了。果子不能摘，季节不让人，果子烂了，我的损失就大了。我只好请人，送东西，也请到那位律师，托中间人拉线，我愿出一万五。只要能保住我的园子，多点也没什么。我白天黑夜忙这个事，三四万不响掉了。”

“怪不得这么高兴，见面就叫唤。这好了，果园又是你的了。”我高兴地说。

“你懂什么？事情可不容易，运输队、果品公司、税务局、乡、县管理头头，你都要去拜。一个拜不好，你的果子别想运出去。今年我算白辛苦了。”她凄楚地说。接着她神秘地凑在我耳边说：“不过，我还有笔化肥生意，能赚个几万。”说完她直起身子大声说：“妈，叫海哥下午派人下果子，装车；派两辆车去拉化肥。我带军军看看我们的新房，再到园里看看，让他多玩几天。”

我不由一颤，这就是我的珍姐吗？初中毕业，连字也写不成个，风风颠颠，没有点女孩相。几年不见，成了腰缠万贯的富翁，我爸爸、姐姐都是工程师。无论是品德，还是知识、才华，珍姐都无法和他们相比，但我爸爸、姐姐一月收

入，还不够她请一次客呢！不要看了，我敢肯定，她的新房一定很豪华……

**【评析】** 本文是一篇以记事为主的记叙文。作者开门见山地交代自己下乡的动因。通过简明的果园景色的描写，巧妙地点明了时间和事情发生的地点。作者借助珍姐胜诉后高兴的谈话，直指文章中心。通过与珍姐的对话，反映了改革、开放、搞活后农村的变化；展示了改革过程中人们的精神面貌；指出了在改革年代，一些干部巧立名目，大搞不正之风，人为地给改革带来的困难及改革过程中出现的弊端。文章的结尾，作者用幼稚的语言，揭示了知识分子劳不副酬，收入微薄的不正常现象，发人深省。文章立意好，巧于选材，突出重点，注意了前后照应，结构比较紧凑。

### 【例文】

#### 书包丢失以后

江苏省邳县运河中学初一（5）班 王春红

“汽——”一声刹车声响过，火车停靠在碾庄车站上。从挤挤抗抗的旅客中走出一位英俊少年，他是运河中学初二（3）班的学生王军，这次专程下乡看望姨母。你看他身着棕色的双面羽绒衫，脚穿崭新的步云牌旅游鞋，红扑扑的鸭蛋脸上嵌着一双忽闪忽闪的大眼睛，一张小嘴哼着流行歌曲。他走着走着觉得渴了，便伸手到书包里掏苹果吃。这一掏不要紧，王军可傻了眼，“书包！我的书包丢了！”他跺着脚喊，瞪圆了眼睛，好象再一使劲两只眼球就要迸出来似的。原来，由于带的东西多，下车时匆匆忙忙，竟忘了取下挂在衣帽钩上的书包了。他急忙跑到对面的岗亭，把东西往

民警那一交，撒腿就跑。他飞过马路，奔过石桥，挤过人群，冲进车站——可是火车早在他刚刚出站时就开走了！

王军丢失了书包，心里急得象一团火。他边走边想，书包里不仅有钱和粮票，更要紧的是还有学生证和下学期要用的语文和数学课本。旁的丢了就丢了，可丢了新书，到姨母家同表弟预习功课的计划落空了，而且，下学期又怎么上课呢？

一到姨母家，王军就哭着把事情的经过说了一遍。姨母哄他说：“军儿，现在世上好人多，说不定有人会把书包给你送到家的。”晚上，王军做了一个梦：他梦见自己的书包从绿色的车窗飞出，慢慢地向他飞来，他连忙奔过去张开手接呀接呀……忽然一脚踩空，掉进了沟里，他被吓醒了。醒来后他想，如果列车员在打扫卫生时发现了书包，看到里面的学生证，根据上面的地址，就会给他寄来的；如果被贪便宜的人发现，顺手牵羊拾走了，那就糟了……这一夜，他再也没合眼。在姨母家只住了两天，王军就急着回家了。在家盼不着书包，便一次又一次地到学校去问老师，都失望而归。王军度日如年，过完了第一个不愉快的暑假。

开学那一天，王军刚跨进教室，班主任来了：“王军！你看这是什么？”王军疑惑地接过来看：“包裹单？——书包！我的书包寄回来啦！”王军惊喜得叫了起来，他拿着包裹单飞也似地奔向邮局。当他从邮局同志手中接过包裹，拆开来看到自己的那只心爱的皮革书包，发现里面什么都没少时，两颗晶莹的泪珠夺眶而出。他再看看署名：“解放军战士”，立刻想起：“对，是他，一定是他，一定是在火车上同我坐在一起的那位解放军叔叔。”回到学校，王军想写封感谢信寄去，可是没有地址，往哪儿寄呢？王军多么希望再见到那位解放军叔叔，对他饱含深情地说一声“谢谢”啊！

**【评析】**本文具体地描写了王军丢失书包后的神态、语言、动作和心理，着重描写了情绪的变化。三个方面写得比较成功：一是寥寥数语勾画出了王军的外貌特征，尤其把“红朴朴的鸭蛋脸上嵌着”的那双“大眼睛”写活了；“瞪圆了眼睛，好象再一使劲两只眼珠就要迸出来似的”，描绘得也很形象。二是丢失书包后“跺着脚喊”的情状，寻找书包时“撒腿、飞、奔、挤、冲”的动作，领取书包前“惊喜得叫了起来”的神态，描绘得活灵活现。三是“象一团火”的急切心理，夜晚的梦境和醒来后的种种猜想，这一些心理活动刻画得比较细致而真切。

### 【例文】

#### 愉快的旅行

江苏省徐州市第一中学初二（4）班 赵馨蕾

一列绿色的内燃机车缓缓驶进了徐州站。五号车厢里，临窗坐着一位身材魁梧的解放军战士，整洁的军服，炯炯有神的眼睛，显得威武刚毅。

“叔叔，这儿有人坐吗？”战士回头一看，是个十三四岁的学生。“噢，没人，你快坐下吧。”战士帮助那个学生把一个大旅行包放到了行李架上，顺手又把他肩上背的小书包挂在车窗的挂钩上。随后学生就在战士的对面坐下了。

列车启动了，车厢里响起了欢快的乐曲。

“小朋友，是第一次出门吧？”战士望着这位略带腼腆的学生问道。

“嗯。”

“叫什么名字？到哪儿去呀？”

“王军，放假去利国乡下看姨母。叔叔，您去哪儿？”

“去山东探亲，顺便看望一位战士的父亲。”

“噢，您的那位战友……”王军迟疑了一下。

“他，已经长眠在南国的疆场上了。”那战士缓缓地说。

沉默了一会儿，王军说：“叔叔，您给我讲讲他的故事吧。”

“这位战友是我们的‘大个子’排长。一天晚上，他带着三个战士去侦察地形，穿过一片荆棘林后，他不幸触响了地雷……”

“他是靳开来叔叔吧？”

“你一定看过《高山下的花环》了？”

“嗯，我特别喜欢靳开来叔叔！”

“他不是靳开来，可他是位靳开来式的英雄。在老山前线，这样的英雄人物太多了。他们为了十亿人民的幸福，作出了最大的牺牲，人民是不会忘记他们的。”

“是的，人民不会忘记他们。”王军紧接着说道。

这时车厢里的喇叭响了：“旅客同志们：六号车厢里有位农民老大爷患心绞痛病，疼痛难忍，请旅客中的医务工作者赶快到六号车厢来！”解放军战士听完广播，迅速打开提包，拿出一个小盒子向六号车厢跑去。

“叔叔，你……”王军诧异地问道。

“我是连队卫生员。”

一会儿，战士搀扶着一位老大爷来了。

“叔叔，这么快就治好了？”

“大爷在水利工地上受了风寒，刚才我用银针扎了一下，他就不疼了。王军，你知道他是谁吗？”

“是谁？”  
“他就是我刚才介绍的那位战友的父亲。”  
“爷爷，您好吗？”王军上前扶住老人问道。

“年纪大了，他们都不让我到工地来。你想，我是劳动惯了的，怎能在家里闲着？就偷偷跑到工地来了。真巧，在火车上又遇到我儿子的这位战友，是他救了我这条老命……”

“大爷，您别客气。军民一家嘛！您的儿子牺牲了，我就是您的儿子。”

王军扶着老人坐在自己的位子上，深情地望着窗外一排排挺立的白杨树急速向后倒去……

【文段】

车速减慢了，前方出现了“利国站”的标志牌。

“叔叔再见！爷爷再见！”

战士帮助王军取下旅行包，送到车厢门口。

“欢迎你长大到军营来！”战士同王军告别。

“一定！Good——bye！”

天放晴了，阳光透过云层洒向大地。战士目送渐渐远离的王军，心想：这是一次多么愉快的旅行啊！

当战士回到座位上时，发现车窗挂钩上的小书包，正要喊王军，忽然汽笛一声长鸣，列车载着愉快的欢笑向远方驶去了。

【评析】这篇记叙文采用第三人称的写法，叙写解放军战士与王军同学在列车上相处的一段愉快生活。通过人物神态的描写和个性化语言组成几个有声有色的镜头，充满浓郁的生活气息。从解放军战士准备看望战友的父亲引出讲战斗故事，从车厢里的广播引出解放军战士为农民伯伯治病，两个小故事衔接自然，选材典型，突出了“愉快旅行”这个中心。

文章着重写解放军战士与王军的问话、谈话及其活动，突出了战士质朴可爱的个性特征，对话生动有趣，显出谈笑风生的味道。解放军战士的音容笑貌跃然纸上，从而把人物写得栩栩如生，读后给人身临其境之感。

全文从“火车进站”写到“列车启动”，又从“车速减慢”写到“向远方驶去”，并以此为线索安排材料，前后连贯，结构完整。

结尾写解放军战士发现王军的书包仍挂在车窗的挂钩上，使读者产生悬念，为续写后文埋下了伏笔。

### 【例文】

#### 绿色的车厢

江苏省徐州市铁路第三中学初三（3）班 王一文

在千里铁道线上，奔驰着一列列绿色的火车。

火车，有货车和客车。客车又有运送旅客的硬座、软座、卧车；为旅客服务的餐车、行李车和特殊用途的邮政、公务车、试验车等。

客车的车体为金属焊接结构，由四个主要部分——底架、侧墙、车顶和端墙焊接而成。在骨架外面包有侧板、顶板和端板，形成一个上部为圆弧、下部为矩形的封闭壳体（筒形结构车体）。

我们通常见到的22型硬座车车体，是长春客车厂生产的。每节车厢的长度为23.6米，宽度为3.106米，从钢轨面到车厢的最高部位的高度为2.8米。车厢的颜色为绿色，因为绿色象征着安全，且给人一种和谐、舒适的感觉。

如果您留心观察，会发现车厢的外面侧板上印有“YZ”，